सुलतान सिंह 'जीवन'

[ संवेदन की शेरिओमे गुंजन... ]

[ भाग - १ ]

सुलतान सिंह “जीवन”

# -: अर्पण :-

जिसके लिए किसी दिन संवेदन सृष्टिमे पाओ रखे उसी संवेदनकी प्रणेता
और उसके अहेसास के हरेक पल को...

जीवन को...

# -: प्रस्तावना :-

हर तरह के साहित्य के नियमो को कुल मिलाकर कहा जाये तो मेरे पास इस पुस्तक के लिए लिखने को किसी भी प्रकार की प्रस्तावना नहीं हे. सामान्यत लिखने की शुरुआत कुछ लिखने से होती हे. ज्यादातर साहित्य सर्जन के लिए नियमानुसार निति नियम होते हे. और हर किसी साहित्यका आधार उसी पर निर्धारित भी होता हे. पर जब कोई व्यक्ति कुछ लिखने की शुरुआत करता हे तब ज्यादातर वो निति नियमानुसार सीडिया चढ़ने के बजाय चढ़ने के पुर्वायोजन हेतु से कुछ लिखकर सर्जन करता हे. वैसे तो लिखा हुआ हर सब्द सर्जन ही माना जाता हे फिर भी उसे कुछ निर्धारित निति नियमो से तरास ने पर उसकी सुंदरता ओर भी ज्यादा खिलकर सामने आती हे.

इस पुस्तक मे समाविष्ट हर रचना सुध्ध साहित्य की तरह हे या नहीं, ये तो में नहीं जानता और मुझे जानना भी नहीं हे. में कवी हू या लेखक ये भी मुझे मालूम नहीं पर हा में एक विध्यार्थी जरुर हू. मेने जबसे अखबारों को पढ़ना शुरू किया तबसे मेने ऐसे ही काव्य पढ़े हे, जिसमे बंधन न थे पर संवेदन जरुर थे और उसी के आधार पर मेने अपनी संवेदना को शब्दों में लिखने की कोशिश भी की हे. फिर भी छंद अलंकार और कुछ लयात्मक तालोके बंधनों को छोड़ कर लिखे जाने वाले साहित्य को मेने तिनके नाम से स्विकार लिया. (गुजरातीमे कहे तो “तणखला”). ओर उसी प्रकार थोडा बहोत लिखा भी हे. में कवी भी नहीं और कविता लिखता भी नहीं हू. हा संवेदन को जीवन के अनुभवों के अधार पर जरुर लिख लेता हू और उसी रूपमे दूसरों के सामने भी रख देता हू.

तो ये हे वो सब कुछ जो शायद ये पुस्तक पढ़ने के पहेले पेज पर आपको जान लेना चाहिए. इसमें काव्य हे या खंड काव्य वो में नहीं कहे शकता पर, हा इसे अनुभव, जीवन, पठन और सर्जन के अधार पर रचित संवेदन की शेरिओ का गुंजन जरुर हे...

# अनुक्रमणिका

## [१] ना जाने क्यों...?

अरमान था छोटा सा,
सपने बड़े थे,
कुछ बनना था पर,
जो आज बन बेठा हु,
येना कभी सोचा था,

क्या यही था,
वो तरसता अरमान,
वो मचलती चाहत,
ना जाने क्यों ... ... ?

मजबूर था मेभी,
हार चूका था अब,
आज फिर तुजशे,
ना जाने क्यों ... ... ?

वो दिलकी चाहत,
तडपते वो अरमान,
महोबत की चिनगारिया,
अरमान जलने लगे थे,
दिल भी दुखा था,
कुछ इस कदर,
ना जाने क्यों ... ... ?

सोचता था की,
समजा लूँगा उसे,
मना लूँगा फिर,

महोबत के जोरसे,
विश्वाशकी डोरसे,

**पर नाकामियाब रहा,**
**ना जाने क्यों ... ... ?**

**कुछ लिखना था,**
**उसे भी बताना था,**
**कुछ अनकही बाते,**
**उसे समजानी थी,**
**अपनी तड़पती यादे,**
**उसेभी तो दिखानी थी,**
**ना जाने क्यों ... ... ?**

**~ सुलतान सिंह 'जीवन'**

# [२] याद हे वो पल...

याद हे वो पल मुझें,
जो पल कभी तेरे थे,
वो सपने, वो अरमान,
वो वादे, वो बहेते अश्क,
उलजे हुए वो सपने मेरे...

याद हे वो पल मुझे,
इन्तेजारे इश्कमे तेरे थे,
वो भीगी होठोकी रसधार,
लिपटकर बहोमे सिमटना,
कुछ पलवो अपने थे मेरे...

याद हे वो पल मुझे,
छिपकर मिला करते थे,
वो लम्हे... वो बाते...
वो यादे... वो तड़प...
इश्क के अहेशास थे मेरे...

वो पल याद हे मुझे,
मिलकर तू सता जाती,
वो अहेसास... वो तलप...
वो चाहत... व् मिलन...
जूरते वो सपने थे मेरे...

~ सुलतान सिंह 'जीवन'

## [३] तू इश कदर...

ये हवा यु तेरी याद,
लहेराके बुला लेती हे,
मनो अकेले में ही यो,
तू खुलके मुशकुराती हे...

महेकती हे वो हवा,
जो यु जिलमिलाती रहेती हे,
वो दीवानगी की कशिश तेरी,
आज भी यु जलाती हे,

कुछ खाली पन सा हे,
तेरी यदोकी सायद कमी हे,
वो बाते अब कहा हे न जाने,
तरी मुस्कराहट पे सब थमी हे....

~ सुलतान सिंह 'जीवन'

# [४] वो मेरे करीब हे...

दूर हे वो इतना में पाना शकू,
पर आजभी दिलके बहोत करीब हे...

दम तोड़ रही हे चाहत मेरी,
उसकी ये कहानी भी अजीब हे...

नींदों में आते हे वो आजकल,
वो सपनोके हालात अजीब हे...

मनो कोई हे जो "जीवन" मेरे,
दिलके आजभी काफी करीब हे...

केसे बताऊ उसके वो हालात,
पास लबोकी अमीरी वो गरीब हे...

काफी कुछ बयां करती हे नज़रे,
आंखोमे उमड़ता सैलाब अजीब हे...

केसे बयाँ करू चाहत उनकी,
कितने वो दिलके करीब हे...

रोटी तो आँखे उस्किभी हे आज,
चाहत भी "जीवन" की अजीब हे,

~ सुलतान सिंह 'जीवन'

# [५] सपना मेरा....

शायद ही मुक्कमल हो,<br>
छोटासा ये एक सपना मेरा...

चाहे वो मुझे कुछ इस कदर,<br>
मुस्कुराता रहे वो चहेरा तेरा...

जुक जाओ तुम कुछ इस कदर,<br>
थाम कर बेठो यु हाथ मेरा...

कुछ इस कदर इज़हार करो,<br>
जी उठे हर रूहका कतरा मेरा...

कहेदे वो कुछ आँखे जुककर,<br>
तुम्हारे लियेही धड़कता हे दील मेरा...

हम मुस्कुराले कुछ इस कदर,<br>
कहे दे क्या चाहतका अंदाज़ तेरा...

~ सुलतान सिंह 'जीवन'

# [६] इकरार

गगनकी कोखमे सूरजकी किरने,
आज मनो छिप रही थी,
रातकी गहेराईभी जेसे अंधेरेमे,
गुलमिल रही थी,
अंधेरेमे दीखता वो रूपसोंदर्य,
रातमे वो सूरत चमक रही थी...

अंजानीसी हरकते दिलमे अपनेपनकी,
लहेरे उमड़ने लगी थी,
छिपानातो रातभी चाहतिथि तुजे,
टूटी रेखाए तुजे दिखा रहीथी,
बिखरे थे केशजालमे खयाल अनजाने,
कुछ कहेनेको मनो तड़प रहे थे...

कारण नाराजगीका कहे न पाई,
आगतो आजभी भड़क रही थी,
केसे सुनाऊ जो सुनना नहीं चाहती,
दुरिमे खुद मचल रही थी,
गगनकी कोखमे सूरजकी किरने मानो,
आज मनो छुप रही थी...

रातके अंधेरेमे फैली छातकी रौशनी,
परछाईभी धीरेसे छुप रही थी,
अँधेरा गहेरा हो चला था,
तुजे छुपाकर दूर करता मुझसे,
रातकी गहेराई मानो अंधेरेमे,
गुलमिलती जा रही थी...

~ सुलतान सिंह 'जीवन'

# [७] काश यु...

काश यु दिलमे प्यार न जगाते,
एकबार कभी सामने ही आ जाते,
वक्त नहीं मिल पाता देखनेका,
काश तुम फिर कुछ बहाना बनाते...

जब मिलते यु भाग जाते शर्म से,
जुबासे न सही आंखोसे ही सुनाते,
हमतो हर बात समज लेते आपकी,
बस कोई इशारा हमें कर जाते...

प्यारतो शायद आपभी करते हमशे,
बस ये दिलको कभी समजा जाते,
चुप्पी आपकी शायद समज पाते,
कुछ यकी दिलको हमभी दिलाते...

हरबार तडपा जाते आप दिलको,
कभितो सामने एकबार आ जाते,
गलतीसे ही सही सपनोमे आते,
पूरी रतना सही कुछ पल बिताते...

किसको सुनते और किसको सुनाते,
तेरे सिवा किसे अपना समज पाते,
सपनेमेही प्यारका इज़हार कर जाते,
जिंदगीभर साथका हम वचन निभाते...

काश वो जवाब हमभी जान पाते,
दिन क्या हरपल हम साथ बिताते,
सुख होया दुःख “जीवन” साथ निभाते,
काश बस आप जवाब में हा कर पाते...

~ सुलतान सिंह 'जीवन'

# [८] दोस्ती...

दिलसे दोस्तिका जो राग बनाना था,
स्कुलके दिनोमेही पहेचान बनाना था,
नहीं जान शके उस वक्त आपके बारेमे,
शुरुआत होते ही जुदा हो जाना था...

न सोचा पुराने दिनोका लोट आना था,
पुरानी यादके सहारे आज पहेचाना था,
फेसबुक से हुआ पहेचान बढ़ाना था,
आजभी पहेलेकी तरह येना जाना था...

बात करके ही पुराने दिन में जाना था,
वक्त के साथही आपको सही माना था,
बातो बतोमेही तो तुम्हे दोस्त माना था,
न कही किसीको वो आपको सुनना था...

अकेलेपनसे भरी दुनियामे लोट आना था,
एक के कारन दुसरे दोस्तको लाना था,
पुरानी जान-पहेचानको आज बनाना था,
अंजानियतसे फिर दोस्त बन जाना था...

नहीं जानते क्या आपका मानना था,
केसे हमने सही-गलत पहेचाना था,
दुश्मन नहीं “जीवन” दोस्तही माना था,
इसलिए तुजपे लिखना जरुरी जाना था...

~ सुलतान सिंह 'जीवन'

# [९] दिल की बात...

दिलका दर्द कीसीको सुनाये कैसे ?
यदोको तेरी दिलसे मिटाए कैसे ?
चाहते थे पा लेंगे तुजे "जीवन" में,
रूठ गए तुम्ही अब मनाये कैसे ?

खुदसे जादा शायद यकीन था तुजपे,
आपहिने भुलाया संभल जाये कैसे ?
चाहते तुम्हे थे जानसे भी ज्यादा,
अब अचानक यदोसे भुलाए कैसे ?

हरबार कोशिश करते तुजे मिलनेकी,
आप आयेही ना तो मिल पाए कैसे ?
पीछा करते रहेते मनो हरपल तेरा,
मुड़करभी न देखो तो दिखाए कैसे ?

दिलका दर्द सबको सुनाए कैसे ?
यदोको दिलसे अब मिटाए कैसे ?
हरपल बसाना चाहते दिलमे "जीवन"
दिलकी दुनियामे आपको बुलाए कैसे ?

आवारा आशिक थे हमतो गलियों के,
आप जैसा काबिल खुदको बनाए कैसे ?
बहोत बदल चुके आपके प्यारमे हम,
बदलाव आपना आपको दिखाए कैसे ?

तिन-तिन सालसे देखनेको तरसती आँखे,
बिन तुम चाहत सामने आए तो कैसे ?
मिलती तो हरबार आमने-सामने मुझे,
उखड़े चहेरेको अब "जीवन" हसाए कैसे ?

दिलका दर्द अब सुनाये तो कैसे ?
यदोको दिलसे मिटाए तो कैसे ?
आजभी तुजे इतना ही चाहते हे,
बिन पूछे दिलका हाल सुनाए कैसे ?

महोब्बततो दिलमे हदसे ज्यादा हे,
दिल चिरके आखिर दिखाए कैसे ?
भुला दिया जब तुनेही इस दुनियामे,
और किसीको अपनी याद दिलाये कैसे ?

इंतजार करते रहे सालोसाल तेरे आनेका,
बिन बतायेभी किसीको सुनाये कैसे ?
बुलाने की तुजे कईबार की कोशिशे,
बिना आपके आये बात सुनाये केसे ?

दिलका दर्द सुनाये तो कैसे ?
यदोको दिलसे मिटाए तो कैसे ?

~ सुलतान सिंह 'जीवन'

# [१०] आखरी आगाझ....

आज बस सब छोडके चले जायेंगे,
पता नहीं वापस कब लौट आयेंगे,
दिलमे लिपटी यादे लेकर जायेंगे,
प्यारकी बाते वो कबतक छुपायेंगे...

अरमान उनके दिलमेभी रह जायेंगे,
रुक जाते अगर वो हमें रोक पायेंगे,
दिलकी बात अगर वो समज जायेंगे,
अब हम अपनी याद सपनोमे दिलाएंगे...

पता नहीं पर अब कही दूर चले जायेंगे,
मानते हे बिन उनके हम ना जी पायेंगे,
जहा मिले थे वही अब फिर छोड़ जायेंगे,
बस सोचते हे बिना बात केसे रह पायेंगे...

उनकी तस्वीर देखकर हमेशा याद करेंगे,
तस्वीरको ही कहानी अपनी समजायेंगे,
नादे वो आपनी कोई निशानी भी हमें,
बची-कुची उनकी यदोको दिलमे दबायेंगे...

जिंदगी अब ना हम खुशीशे बितायेंगे,
चुक गये आजतो ढूंढते ही रह जायेंगे,
दूर तलक हम साथ पानीके बह जायेंगे,
बिन उनके किसीको न मिल पायेंगे...

बहेते पानीकी तरह पाससे गुजर जायेंगे,
पवनके झोंकोमे अपनी याद दिलायेंगे,

जाते वक्त ये संदेश छोड़ जायेंगे “जीवन”
सोचते हे क्यावो कभी हमें ढूंढने आयेंगे...

हमतो हमेशा उनकी यादमे रहे जायेंगे,
दिलकी यादे हरवक्त उन्हें तडपायेंगी,
जब अकेलेमे हमारी बात दोहरायेगी,
खोदिया अगर तो कभीना चाह पायेंगे...

याद रखना कभी बहोत याद आयेंगे,
ना भुला ना यादोसे हमें मिटा पाओगे,
जब जब करोगे कोशिश हमें भूलनेकी,
हम उतनेही जादा आपको तडपायेंगे...

बस आजही चले जायेंगे...
चले जायेंगे.....
आज ही......
कही दूर......
तुमसे बहोत दूर......
जी लेंगे पगली हमभी......
यादो के सहारे.....
“जीवन”......

~ सुलतान सिंह 'जीवन'

# [११] एक सवाल सा...

एक सवाल सा मनमे आता हे,
यही हरबार दिलको जलाता हे,
जब अकेलाही इन्सान आता हे,
क्यों छुटनेका गम सताता हे...

एक सवाल सा मनमे आता हे,
क्यों दस्तूर समज न पाता हे,
दावा करता रहेता हमारा होनेका,
वोही आए वक्त छोड़ जाता हे...

एक सवाल सा मनमे आता हे,
एक पलभी हमें अपना न माना,
दिल क्यों उसीकी याद दिलाता हे,
लाख कोशिशो बाद क्यों सताता हे...

एक सवाल सा मनमे आता हे,
दिलो-दिमाग बेकार हो जाता हे,
धडकनपे सुर बजने वाला ही कोई,
दिलके यु हर तार तोड़ जाता हे...

एक सवाल सा मनमे आता हे,
दर्द दिलका जवाबसे उभर जाता हे,
जब उसका जवाब नही आता हे,
समजना पाता क्या हो जाता हे...

एक सवाल सा मनमे आता हे....

~ सुलतान सिंह 'जीवन'

# [१२] क्यों ?

आजभी आप मिले... पूरा दिन नहीं दिखे... क्यों ?
जब देखा हमने तो आखिर मुह फेर लिया क्यों ?

हमने बात करने को कहा आपने मना किया क्यों ?
मुलाकात को कहा... मिलने परभी तूम न रुके क्यों ?

जब छोड़ना नहीं चाहती, फीर तोड़ने की कोशिशे क्यों ?
प्यारही ना था तो, दिलमे इस आगको जलाया ही क्यों ?

दिलमे अगर थोड़ी भी चाहत ना बची थी मेरे लिए,
दिखानेका हर जूठा बहाना फिर तुमने बनाया क्यों ?

सुना था प्यार दो दिलो के बिच मिलन का होता हे,
इसी दिलको हमेशा दुखाने की कोशिशे की क्यों ?

जब ना थी चाहत और हसरत यु साथ निभानेकी,
तो इस नाचीज को लिखने पे आज लगाया क्यों ?

इसका वक्तभी देनेका तुम्हारे पास नहीं “जीवन”
आखिर बहाने प्यारके इतने सवाल जगाये क्यों ?

~ सुलतान सिंह 'जीवन'

## [१३] लेकिन रहेने दो...

कई यादे दिलके सागरमे गुमटी रहेती हे आब,
हर यादको भुला शकता हु दिलसे आजभी,
लेकिन रहेने दो....

कई बाते और वादे जो तूने किए थे कभी,
उस हर बातको भुला शकता हु आजभी,
लेकिन रहेने दो....

हर बार मुह मोड़ लेती हे देखकर मुझे,
जवाब इसका आजभी मांग शकता हु,
लेकिन रहेने दो....

छुप जाती हे यु मुझे सामने देख कर,
कारण नफरतका पूछ सकता हु आजभी,
लेकिन रहेने दो....
कहे दिया आज तूने की तुमसे प्यार नहीं,
पूछ सकता हु आपना कसूर आजभी,
लेकिन रहेने दो....

कसरना छोड़ी तूने इन्सानसे हेवान बनाने में,
हेवानियत यही दिखा शकता हु आजभी,
लेकिन रहेने दो....

बेवफाई की बाते सहेलिओ से करती हो,
किस्से वफ़ा के तेरे सुना सकता हु आजभी,
लेकिन रहेने दो....

पसंद नहीं तुजे आज मेरा मुह भी देखना,
क्यों मरमिटी चहेरेपे पूछ सकता हु,
लेकिन रहेने दो....

हो गए बदनाम हम तेरे खातिर दुनियामे,
बदनाम तो तुजे भी कर शकते हे,
लेकिन रहेने दो....

आज छोडके अकेला तुम चल दिए हो,
छोडतो हमभी शकते थे तुम्हे,
लेकिन रहेने दो....

सुनोगी सबतो खुदपे शर्म आएगी तुम्हेभी,
वादे आजभी याद दिला शकता हु,
लेकिन रहेने दो....

दिल दुखाने वाली अब हरकते करते हो,
येतो तब हम भी कर शकते थे,
लेकिन रहेने दो....

~ सुलतान सिंह 'जीवन'

# [१४] अजीब हे...

जिंदगीका ये सबबभी सिख लेंगे कभी,
रफ्तारमें चलता अब संसार अलग हे,
भूल जाते हे लोग काफी कम वक्तमें,
करामते भुलानेवालोके सोख अजीब हे,
याद करेंगे न जाने क्यों हर वक्त तुजे,
भुलपानेकी तुजे सारी कोशिश अलग हे....

भुला चुकि हर अहेसास को आज हमारे,
तुजे याद दिलाने की कोशिशे अजीब हे,
मिल गया आज नया कोई दोस्त तुजे,
मिलने की तुजसे ये कोशिश अजीब हे,
मानती अब कुछ और ही हमें "जीवन",
उसे समजा पानेकी कोशिश अजीब हे....

सिर्फ दिलमे होते अगर भूलभी जाते,
यदो से भुलानेकी कोशिशे अजीब हे,
याद आजभी करती हे ना चाहकरभी,
भुलानेकी तेरी हर कोशिशे अजीब हे,
मन भर चूका मुझसे तो भूलजा हमें,
भूलनेकी और चाहनेकी कोशिश अजीब हे....

जीना शिख लेंगे तुजसे जुदा होकरभी,
भुलाना शके दिलशे करिश्मा अजीब हे,
चाहा यु सारे हाल-ए-जहानको भुलाके,
इस कदर अचानक रूठना अजीब हे,
सवरने सजानेकी हरवक्त चाहत मुझे,
जाने खुदको मिटानेकी चाहत अजीब हे....

~ सुलतान सिंह 'जीवन'

# [१५] कुछ तो समजे...

चाहत थी कई दिनों से दिलमे कोई तो समजे,
इश्क-ए-महोबतना सही हालत-ए-जज्बात समजे,
सोच उठते क्योना "जीवन"के हालात ही समजे,
ख्याल आयाकी ना जाने वोभी कुछ और समजे....

बात हे दीवान-ए-ख़ास और दोस्त-ए-अहेसासकी,
मेरी कहानी और जीवनके हर पल-ए-दस्तानकी,
प्यार को रखु एक तरफ़ा तो शायद कुछ समजे,
ना महोब्बत न इंतेजार-ए-शुरुआत इन हलातकी....

दीवानी हे अपने हाल और जीवन-ए-जज्बातकी,
बुरी नहीं वो जलती इसी उम्मीदे उसी बातकी,
मिलेगी जिसे सुधार देगी जीवन उसका जानेमन,
तू बस उम्मीद-ए-किरन जीवनमे नए आस की....

ख्यालतो आया होगा मेरी कोई बात नहीं इसमें,
समजना पाई तू बात-ए-शब्दोके बिखरे हालत की,
समजना ले अपनी तरह, नहीं सबका हु गुलाबो,
तू तो समज कुछ कलि तू गली-ए-गुलेस्तानकी....

कहेते लोग मेरी बाते कल्पना-ए-महेल जीवनके,
सिर्फ ये बयान-ए-महोब्बत हे बिखरे अहेसासकी,
सलाह्कारतो बनी मानभी गई बाते समजानेको,
सच्चिसी लगी बाते तेरी चाँद-ए-मीठी रात की....

दिलतो तेरा भी धड़कता होगा जीवन-ए-खासमे,
दूरिया न बना सोचके सागर बात हे खासकी,
समजना ना अपने आपको जुदा कविसे जिगी,
जुडी हर कड़ीमें बात तेरे मन बहेते अहेसासकी....

~ सुलतान सिंह 'जीवन'
[ फॉर जिगी टू आस्क अबाउट जीवन ]

## [१६] न जगा पाया...

कुछ कहानियातो हमनेभी लिखनी चाहीथी,
बस शब्द ढूँढना मुश्किल सा बन गया था,
लिखनेकी कवितायें भी कईबार की कोशिशे,
सुर-तालभी तुज बिन बेजान बन गया था...

दास्ताँ-ए-महोब्बत कई बार लिखनी चाही,
महोबते जीवनमे प्यार न मिल पाया था,
हरबार कोशिश करता रहा तुजे चाहनेकी,
बस तुजमे ही प्यार नहीं जगा पाया था...

अरमानतो सजाये हमने साथ बिताने को,
हरपल बनती तेरी कमीना मिटा पाया था,
लाख कोशिशकी सपने तुज संग संजोनेके,
सपनोमे भी अपना तुजेना बना पाया था...

चाहत तुजे दिलो-जानसे दिलमे बसा लेनेकी,
थोड़ीसी जगाभी तेरे दिलमे न बना पाया था,
मिलने की चाहत आजभी बरकरार सालोसे,
दिलमे अरमानभी मिलनके न जगा पाया था...

अरमान रुठनेके जोतू मनानेकी चाहत करती,
मनानेकी कोशिश तेरा दिल न कर पाया था,
कईबार कोशिशकी तुजे हाल-ए-दिल जतानेकी,
बदकिस्मती ना भुला पाया ना मना पाया था...

~ सुलतान सिंह 'जीवन'

## [१७] गमकी वजह...

मुश्किल शा लगता हे आजकल तुज-बिन,
सोचता रहेता हु तू सही, या में गलत हु,
खुश लगती, आज तू मुजशे जुदा होकरभी,
क्या सचमे ? खुश हे या सब दिखावा हे....

उस वक्तभी तू खुश थी जब हम साथ थे,
दूर होनेकी न तुजे तमन्ना, मुझे आस थी,
क्या वास्ता खुशीका मेरे जानेसे बढ़ा तुजमे,
या तेरे छोड़ जानेसे ये असमंजस आया था....

तेरी ख़ुशी अगर इशमे हेतो सही लगता हे,
बिन तेरे मेरातो हरपल अधुरासा लगता हे,
क्या तू सचमे दिलशे खुश हे? या दिखावा,
मुझे तेरा अब मुशकुरानाभी छलावा लगता हे....

मुझसे दुरी बनानेकी ख़ुशी हेतो शोखसे छोड़,
किश कदर खुश रहेना मुजेभी कभी शिखादे,
नफरतमें बदल चुकी चाहत इस कदर तेरी,
इतना फर्क छोटे से वक्तमे झांसा लगता हे....

खुलकर जलकती खुशिया बेशक अच्छी हे,
बिछी उदासियोका कारण अलग लगता था,
दूर हे मुझसे इस बातसे तुजे ख़ुशी हे की,
टूट चुकी तेरी पानेकी चाहत ऐसा लगता हे....

~ सुलतान सिंह 'जीवन'

# [१८] बुझती आस....

साँझ के साथ आसाओकी रातभी ढल चुकी थी,
चाँद खिलाथा आसमानमे, और चांदनी रूठी थी,
आसकी आज एक और किरण तुजमे दिखी थी,
कुछ अरमानो की पूरी होनेकी वझाह दिखी थी....

दूरिया बढ़ाने वाले थे कई लोग “जीवन”से आज,
मिटानेकी वो दुरिया एक आस तुजमे दिखी थी,
ना जाने क्यों तेरे सहारे मन निश्चिंत रहेता हे,
मतलबी हे यारी भी बात सच्ची सी लगाती हे....

भुला देना तुभी ऐ दोस्त, आदतसी हे ठुकरानेकी,
जीकर गममें भी हमें सिर्फ खुशियाही बाँटनी थी,
यार मना तुजे, वरना दिलकी बाते न करते कभी,
आँखे फिर एकबार मानो पहेचानमे गलत हुई थी....

शिकायते आजभी होंगी तुजसे और किसी ओरसे,
“जीवन” भी इस कदर बिना सुने ही तो रूठी थी,
जानथी वो और तुम फिरसे आस उसे पाने की,
महेरबान वो तुम भी अब महेमानसी बन चुकी थी....

चाहने वालेनेभी कहा की कोशिशे मुझे समझनेकी,
तुजे समजना गलत तो बात ही मनो बेगानी थी,
मेरी बात पूरी तो वो खुद्धी कभी नहीं सुन पाई,
वजहकी बसवो आसभि तुजमे दम तोड़ चुकी थी....

~ सुलतान सिंह 'जीवन'

# [१९] क्यों ख्याल आया हे...

कोईतो बदलाव मानो इस कदर आया हे,
दिलनेभी तेरी यदोको मुझसे दूर लाया हे,
कोइतो ऐसा हरबार अपनी और खींचता हे,
भुलाचूका या कोई मुसीबत और लाया हे....

कुछ अच्छा तुजमे ख्याल आता कईबार,
इसी वजहसे शायद ये बदलाव आया हे,
सुधरेंगे ये हालात ना जाने कभी ये सब,
दुबारा मानो दिल टूटनेका अंजाम आया हे...

इतना असानथा तेरेलिये मुझे भुला पाना,
फिरना जाने क्यों तुजेये ख़याल आया हे,
एक पलना निकलती यादे खयालो से तेरे,
फिर क्यों तुजे बेवफाईका ख़याल आया हे....

भुलादिया मुझे तूने कोन से मायुश पलसे,
भुलानेका तुजेभी मोसम-ए-अंदाज़ आया हे,
दिल जुड़ेंगे कभी या बिखरेंगे कई और भी,
ख़ुशीका पैगाम या कयामतका सैलाब लाया हे....

सोचमे हु न जाने आगे क्या करू जीवनमे,
बदलेगा मुझे या मिटादेनेका बहाव आया हे,
चाहतना हो जाये कही किसी अजीजसे फिर,
जिसका ख्याल तुजे दिलसे दूर बहा लाया हे....

दिलपे राज तो आजभी उसी अजीज का हे,
मायुशपल जब तुजे भुलानेका खयाल आया हे,
बेवफाई कभी नहीं मेरी चाहतमे कोई कहे तो,
भुलाके दुनिया फीर तुजमे मुझे बहा लाया हे....

~ सुलतान सिंह 'जीवन'

## [२०] कुछ इस कदर...

याद तो आज भी हे तू,
कुछ इस कदर...
हर पलमे... हर वक्त...
हर यादमे... हर बातमे...
न जाने क्यों हे यु दिलमे,
कुछ इस कदर...

महोबतततो आजभी उतनी तुजसे,
कुछ इस कदर...
हर रंगमे... हर अदामे...
हर मौसम... हर दिन...
न जाने क्यों बसी हे मनमे,
कुछ इस कदर...

मनानेकी चाहत आजभी हे तुजे,
कुछ इस कदर...
हर गलती... हर गलतफेमी...
हर खयालात... हर अल्फाज...
समज नहीं पता बस तुजे,
कुछ इस कदर...

याद तो आजभी हे "जीवन"
कुछ इस कदर...

~ सुलतान सिंह 'जीवन'
[अनुवाद गुजरती से... मूल लेखक - सुलतान सिंह]

# [२१] आस कर रहा हु...

धोखे से भरी इस जिंदगी में,
हर पल हर एक समयमे,
जाने क्या कर रहा हु...

परेशान हु इस बेइंतेहा जिंदगीसे,
फिरभी ना जाने किस आसमे,
जिनकी कोशिश कर रहा हु...

इन्तेजार हे उसके आने की,
जिसने छोड़ा था बर्षो पहेले,
उसीके अनेकी दुआ कर रहा हु...

संभालेगी कभीतो आके इस,
खामोस दिलको, प्यारकी गहेराईसे,
बस यही आस कर रहा हु...

आके बचाले यार अबतो जी लिया,
बहोत बर्दास्त हुई ये नफरत,
प्यारका अहेसास, पानेकी चाहत,
हर पल हर लम्हा मर रहा हु...

~ सुलतान सिंह 'जीवन'

# [२२] कुछ तो नया था...

वो आहट तेरी, कुछ तो नया था,
उस दिनमे, उस पलमे,
उस रौशनी की किरण में,
तेरी आँखों में, कुछ तो नया था,

मन यु बेचेनी से, तड़प उठा था,
मानो चाहत थी, बरसो पुरानी,
तेरी मुस्कराहट और मीठी आवाजमे,
फैली तेरी महेक में, कुछ तो नया था,

वो अंदाज़ तेरा, वो आवाज तेरी,
तहजीब भी कुछ इस कदर उतर गइ,
डूब जाऊ तेरी आंखोमे पर सागारभी वो,
भरा पड़ा था, उसमे कुछ तो नया था,

हार चूका था खुदको कुछ इस कदर,
तेरी ही आँखों में मानो कमी थी,
तेरे इकरार, मेरी चाहत की वो तड़प,
उस पलकी तड़प में कुछ तो नया था,

मनो कोई तो रिश्ता था बिच दोनों के,
जो मनो सदिओसे भी पुराना सा था,

~ सुलतान सिंह 'जीवन'

# [२३] रहेता था...

लोग हस्ते हे अब मुजपे वोही जो कभी,
नाज करते, पहेले और अब तेरे खातिर,
मुडकर यु चली जाती उनके ही सामने,
जिन्हें तेरी वफाकी दुआ देता रहेता था,

तडपाना क्या कम था जो अब जुल्म,
न मुस्कुराना और रुठासा भाग जाना,
ऐसी तो मेने गलती भी क्या की बता,
जिसकी सजाये अब पाता ही रहेता था,

रुठ गयी तू मुझसे बता करतो देखती,
हर खता कर जाते हम तुजे मनानेकी,
पर तुने मुह मोड लिया कुछ इस कदर,
आज भी कोशिश में करता ही रहेता था,

तू मेरे खातिर एक पल तडपे ना चाहे,
यही वजह हर गलती को माफ किया,
तुने एक गलतीको टूटने की वजह दी,
तू हस्ती रही में तडपता ही रहेता था,

~ सुलतान सिंह 'जीवन'

# [२४] वजह क्या थी...

कोई तो समजादे एकबार के खता क्या थी,
इस कदर चाहते रहेनेकी भी वजह क्या थी,
भुल तो शायद मे भी जाता तूजे अबतलक,
जाने उस बेवफा से वफाकी आस क्या थी,

एकबार बोलती मेरी चूक हुई आखिर कहा,
आखिर दर्द इतना देने की वजह क्या थी,
इससे अच्छा था मुझे कभीन अपनाती ही,
इतना पास लाकर भुलानेकी खता क्या थी,

तड़प उठता हू जो मुह फेर लेती हे मुजशे,
कांप उठता हू तेरी नफ़रत सही नहीं जाती,
लाख कोशिशे कर चुका तुजे समजाने की,
चाहत दिलमे इस हदतक तेरी जाने क्या थी,

भरोसा किया उन्होंने ही हर पल दिल तोडा,
जिन्दगीको भी मुजशे ही शिकायते क्या थी,
मर जाता तो शायद भुला पाता अब तुजे,
इतनी दरदे दास्ताँ जिनकी जरुरत क्या थी,

शायद गलती की इस हद तक चाहने की,
चाह ना थी तो खेलनेकी जरुरत क्या थी,
इस हांल तक पहुचा दिया महोबतने जब,
अपना ले, आखिर छोड़नेकी वजह क्या थी,

~ सुलतान सिंह 'जीवन'

## [२५] दुपट्टा...

यु खड़े थे तेरी रहोमे पलके बिछाए हम,
सोचा हमारी तुमशे मुलाक़ातही हो जाए,
मर्जी तेरी जाने कुछ और ही रही होगी,
तुने सोचा, फिर नफरतकी बात हो जाये,

कोशिश की थी थाम लेने की यु गुजरते,
ना हाथ आई तू, रहे गया दुपट्टा हाथ मे,
कहा तुजे लेजा ये दुपट्टा तू पास आकार,
कुछ पल मिल जाते बितानेको साथ में,

खड़े कुछ यु तेरी रहोमे पलके बिछाए,
जाने अनजाने सही कुछ बात हो जाऐ,
छिनना नियत नहीं समजाना चाहते थे,
दुपट्टा तो बहाना की मुलाकात हो जाती,

कुछ शुकुन मिलता मिठेसे अहेसास का,
अगर दुपट्टा लेने तू फिर से लोट आती,
कोई जोर नहीं चाहता चलाना तुज पर,
महोबत समजाने की तरकीब नहीं आती,

यादे हरपल हे मनमे अब लहेरोकी तरह,
चाहता हू पर अब ये सुनामी नहीं आती,
बरसती आँखे तेरी यदो की कहानियो में,
तेरी आंखोमे क्या मेरी याद भी नहीं आती.

~ सुलतान सिंह 'जीवन'

# [२६] कश्मकश...

लोग कहेते हे ना तूजे महोबत हे न मुजे,
बस खेल सब मनो ये पागलपनका ही हे,
न में तुजे भुला पाता हू, एक पल न ही,
तुजे एक पलको याद करने की परवा हे,

लोग कहेते हे ना तुजे चाहत हे न मुजे,
चाहत हे खुले आसमान की तराह मनो,
में हरपल तेरे लोटने की दुआ करता हू,
शायद तू न कभी लोटने की जिद में हे,

लोग कहेते हे तू कभी न समज पायेगी,
खो चूका तुजे, क्योकि खफा हे तू मुजशे,
केसे में आज भी तुजे मनानेको जीता हू,
तन जुदा और मन आजभी जुदा हे मुझसे,

लोग कहेते अब ना पा शकुंगा तुजे कभी,
सोचता हू पाने का नाम मतलब नहीं हे ?
बेइन्तेहा जेसी कोई शर्त नहीं महोबत की,
तरसता हू चाहतका, पाना मकशद नहीं हे,

लोग कहेते हे, भुला तुजे और फिर जियु,
जिनकी वजहों में, तू आखरी अहेसास हे,
भूल के ना जी पाऊं में शायद एकपलभी,
हर पल यादोमेभी तेरे होनेका अहेसास हे,

~ सुलतान सिंह 'जीवन'

# [२७] अपना लगता हे...

तुज पर जाने क्यों आब अपनासा लगता हे,
कोई अपना-पन पुरानी कहानी सा लगता हे,
कोशिशे करता हू सो जाने की तुजे भूलकर,
बिस्तर पे बिछी चादरमें दुपट्टे सा लगता हे,

क्या तेरा हर सपना आब अपना लगता हे,
तुजे पाना भी मनो अब सपना लगता हे,
मिली बड़े दिनों बाद कुछ बात कर लेती,
भाग ऐसे गई साथ मानो बेगाना लगता हे,

मिल जाता अगर लब्ज़ सुननेको मधुरसा,
मुस्कुरा उठता मानो अपना सा लगता हे,
न जाने किस बात पे बनी नाराजगी तेरी,
फिर तेरा मिल पाना सपना सा लगता हे,

शायद ही भूल शकता हू तुजे जीवन मे,
तेरे बिना वजूद मेरा अधूरासा लगता हे,
दुनियामे चाहने वाले शायद जादा न मिले,
तेरे सिवा कोन जो अपना सा लगता हे,

भूल शकती, मुझे किसी हालात के मारे,
आखर में तू "जीवन" अपनासा लगता हे,

~ सुलतान सिंह 'जीवन'

## [२८] दुपट्टा तेरा...

गुजर गई यु पास से मानो चेन चुराया मेरा,
दिलथाम कर बेठा था तुजसे मिलन आसमे,
दोड कर यु निकल गई मानो टूटा दिल मेरा,
कुछ न पकड़ शका रहा हाथ मे दुपट्टा तेरा,

कोशिश तो तुने भी की दुपट्टा छीन लेने की,
मेरी जिंदगी सुनले जीवनका तू सवाल मेरा,
मुह मोड कर चली गई अनजानो की तरह,
आंसू भी सरके तो नजर आया दुपट्टा तेरा,

मिलना कभी किसी बहाने हमसे कुछ बाते,
हो तो और मिल जाए शायद खयालात भी,
कुछ कहेना हे बस मुझे जो तू सुनती नहीं,
सुनलो बात और ले जाओ फिर दुपट्टा तेरा,

तू क्या जाने बिन तुज क्या हाल अब मेरा,
हर पल आता अब याद बिताया साथ तेरा,
क्या पल थे हसीं वो जब तू साथ थी और,
मेरे हाथो मे महेकता रहता था दुपट्टा तेरा,

ले जाना अगर तू समज न शके महोबत,
न इसमें अब महोबत, ये बस दुपट्टा तेरा,

~ सुलतान सिंह 'जीवन'

# २९. सरहदी जवान...

दर्द क्या हे ये अच्छे से जनता हु,
हर एक दिलमे हे येभी मानता हु,
हरपल दुनियाकी भीड़मे घिरकर,
डरको हर तरहसे मेभी जनता हु ।।

परिवार से जो सालो दूर रहते हे,
हर पल वो घिरे रहते हे दुश्मनो से,
डरको हिम्मतमें बदलने वालो को,
में सच्चा हिम्मत वान मानता हु ।।

मरते कई जवान सरहद पे हरदिन,
चंद शब्द... चंद आंसू... चंद पैसे...
बेसहारा परिवार, सहादत भी नहीं,
ऐसे वीरोको ही सुलतान मानता हु ।।

क्या होती हे सच्चाई राजनेताओकि,
हर इंसान यहाँ ये सब जनता भी हे,
वो जो मरमिटने वाले देशकी खातिर,
उनिको नेता और शौर्यवान मानता हु ।।

हस्ते जान देते हे सर-जमीन के लिए,
लिपटे बदनपे तिरंगेको शान मानता हु,
हर खुशी-आनंद मिले उन परिवारको,
जीने दिलसे सच्चा धनवान मानता हु ।।

रतन खोके जीते हे जो सर उठाकर,
उम्मीद बनते हे लाखो और आनेकी,
भारत माँ की वो लाज बचाने वाले,
शहीद और सच्चा सपूत मानता हु ।।

दर्द क्या होता हे किसीको खोने का,
परिवारके दुःख अच्छे से जनता हु,
कूद पड़ते हे जो देशकी खातिर यु,

**उन्हींको देसकी सरकार मानता हु ।।**

**~ सुलतान सिंह 'जीवन'**

**[ Specially dedicated to the great indian aarmy ]**

**( written before 2015 )**

# ३०. हे भगवान...

तू कोन हे ये तो नहीं जनता,
सुनी बातोंको में नहीं मानता,
भगवान कहते भले सब तुजे,
बिना देखे में भी नहीं मानता ।।

तू कोन हे ये कोई नहीं जनता,
आदर्श हे तुजे कोई नहीं मानता,
ढूंढते लोग सब तुजे पथ्थरोमे,
पथ्थर को में भगवान नहीं मानता ।।

कहते हे कोई तुजे नहीं जनता,
बात सच हे ये भी नहीं मानता,
तू हे तो मेरे आसपास ही कही,
ना जाने कोई कयो नही मानता ।।

सच्चाई क्या हे तेरी कोन जाने,
तेरीही बातोको कोई नहीं मानता,
राहे कई हे तुज तक पहोचनेकी,
दूसरोंकी बताई राहे नहीं मानता ।।

तू हे कहा ये भी में तो नहीं जानता,
पर तू हे ही नहीं येभी नहीं मानता,
मुजमे ही बसा हे कही पर तू यु,
मुझसे हे अलग ये में नहीं मानता ।।

तेरी सच्चाई क्यो कोई नहीं जनता,
तेरी हकीकत भी कोई नहीं मानता,
पत्थर को नाम दिया तेरा इंसानोने,
दुनिया बनाने वाले तुजे नहीं मानता ।।

~ सुलतान सिंह 'जीवन'

# [३१] सवाल करना

कभी श्याम मिल जाए तो सवाल करना,
राधा क्यों न रही संग यही सवाल करना,

यमुना भले बहेती रहे अविरत एकधारमें,
कृष्ण ही न आए किनारे तो सवाल करना,

वृंदावन भले गूंज उठे गोपियो के प्रेम से ही,
बासुरी की धुन न सुनाई दे तो सवाल करना,

रास रचाये गोकुल में गोपिया श्याम संग,
राधा ही न आये मिलने तो सवाल करना,

कहते हे वैकुण्ठ हे श्री हरि कृष्ण का धाम,
वहां राधा साथ न मिले तो सवाल करना,

भले भुला बैठे भागवत में राधा को शास्त्र,
कृष्ण मे राधा मिट पाये तो सवाल करना,

~ सुलतान सिंह 'जीवन'
(१०:०९, २६ जुलाई २०१६)

# [३२] आरज़ू

रहमत खुदा की होती तो क्या बात थी,
तू आज फिर साथ होती तो क्या बात थी,

मांगने निकला ख़ुशी के सागर में आज,
दो बूंदे भी पास होती तो क्या बात थी,

मंदिर मे भले, न मिले मजार पे एय खुदा,
महोबत गर साथ होती तो क्या बात थी,

दुनिया नहीं खड़ी साथ तो कोई गम नहीं,
एक तू अगर साथ होती तो क्या बात थी,

फिरता रहता शहर भरमे तुजे यु ढूंढता,
तेरी कोशिशें साथ होती तो क्या बात थी,

दिल भले तूट जाता कभी तेरी बेवफाईसे,
आखरी पल साथ होती तो क्या बात थी,

न कहूंगा 'जीवन' किसीसे अंजामे महोबत,
आजभी गर तू साथ होती तो क्या बात थी ।

~ सुलतान सिंह 'जीवन'
( १२:४५, २ अगस्त २०१६)

# [३३] तू साथ हो

खड़ा हू आज,
जीवन सफर में,
भीड़ जाने को,

सोचा हे यही,
जीतूंगा हरदम,
जो तू साथ हे,

हारुंगा नहीं,
दे यु हिम्मत आज,
के लड़ शकु,

मारु न भले,
महोबते इश्क मे,
मीट जाऊंगा,

खड़ा हु यही,
आज इंतजार में,
तेरी खातिर,

कहेंगे वो क्या,
छोड़ ही दो सोचना,
साथ हमारे,

नहीं अकेले,
अब तुम भी कभी,
साथ हो सदा,

~ सुलतान सिंह 'जीवन'
(१:४९, २ अगस्त २०१६)

# [३४] महोबत श्यामकी

भूल जाना तू ये महोबत अब श्याम की,
ये नहीं हे वो राधा, ये तो सीता राम की,

बात न कर यहापे राधा और श्याम की,
गोकुल नहीं, ये तो अयोध्या हे राम की,

मिलेगी नहीं अब रासलीलाये श्यामकी,
नहीं हे वृंदावन, ये तो कर्मभूमि राम की,

सूर्पनखा से बोलो न करे इज़हारे इश्क,
श्याम नहीं ये, यही तो मर्यादा राम की,

सवाल नहीं महोबतका, ये अग्निपरीक्षा,
ये मुक्तता नहीं, दुनियादारी हे राम की।

~ सुलतान सिंह 'जीवन'
(७:१९, ३ अगस्त २०१६)

# [३५] आम हो जाये

कभी इश्क की भी इम्तेहान हो जाए,
तू हमारी, ओर हम सिर्फ तूमारे हो जाए।

ना चले या तो नैनो से सीधे तीर हमपे,
अगर चले तो भले दिलके पार हो जाए,

रहेगी ये महोबत कितने दिन ऐ सनम,
भले ही आज इकरार खुले आम हो जाए,

कहेंगे लोग क्या, मत सोच आज यहा,
आज भले दुनियादारी नीलाम हो जाए,

कर इजहार-ए-महोबत तब तलक आज,
जब तलक हमें भी इश्क बेसुमार हो जाए,

~ सुलतान सिंह 'जीवन'
(३:१९, ४ अगस्त २०१६)

# [३६] रास्ता बता

अरे ओ जिंदगी एक बात बता,
गुजरी ज़िंदगी के हालात बता,

भूले नहीं हम जीवन भर उसे,
केसे भूली जरा दास्तान बता,

शायद नहीं  हम दोनों में इश्क,
यही इश्क की क्या इन्तहा बता,

भुला दे या तो हम जीवन से या,
ए खुदा हमें अपना मुकद्दर बता,

भूली राहे  उनका साथ निभाते,
कहा चलु अब जरा रास्ता बता,

ऐ खुदा मोहबत ही हे अगर सब,
फिर क्या है हमारा  वास्ता बता,

अब नहीं मिलते जीवन के पथ भी,
तू आगे चल ,खुदा ओर रास्ता बता।

~ सुलतान सिंह 'जीवन'
(१२:०८, १२ अगस्त २०१६)

# [३७] कल देश जागेगा

जब एक दिन ये देश फिर जागेगा,
हरबार ये बस, हिंदुस्तान मांगेगा,

न यहा कोई धर्म होगा न जात,
तब जाके देशका इंसान जागेगा,

भले मर जाये धर्मका नाम यहा,
ये इंसानियत का फरमान मांगेगा,

ना रहेगा भेद अल्ला भगवानमें,
तभी यहाँ सच्चा इन्सान जागेगा,

मेरा ये देश कल फिर से जागेगा,
थोड़ी भले सही देशभक्ति मांगेगा,

दिखावेमें तिरंगा रस्ते गुमता रहेगा,
अगले दिन अपना सम्मान मांगेगा,

कल जुकना भले तिरंगे के सामने,
वरना वो अपना सम्मान मांगेगा,

राजनेता सोये रहेंगे कही महेलो मे,
सड़क पे भी रातभर तिरंगा जागेगा,

ना जात, ना पात और ना ही धर्म,
ये बस एकजुठ हिंदुस्तान मांगेगा,

जब एक दिन ये देश फिर जागेगा,
हरबार ये बस, हिंदुस्तान मांगेगा,

~ सुलतान सिंह 'जीवन'
( ०९:१४, १५ अगस्त २०१६)

## [३८] हमारा हो जाये

छुपाउ कब तलक ये महोब्बत,
क्यों न आज इकरार हो जाये,

चाहे इश्क भले बेगाना हो जाये,
आसमान फिर हमारा हो जाये,

करता रहे जो हमशे महोबत यु,
बस सिर्फ वोही हमारा हो जाये,

क्या कशिश हे उनकी आवाजमें,
बात भले आज पुरानी हो जाये,

इश्क धड़कन में गूंजता ही रहेगा,
भले ये सांसे ही बेगानी हो जाये,

~ सुलतान सिंह 'जीवन'
(३:००, २० अगस्त २०१६)

# [३९] याद करना

दिल अगर दुःखे तो याद करना,
हम ना सुने तो फ़रियाद करना,

कोई भले ना हो तुम्हारे जीवनमे,
हमारी कमी खले तो याद करना,

दिले-दास्तान सुनाएंगे तुजे सनम,
आंसू निकल आये आवाज करना,

महबूब मेरे दिलो जान हे तू मेरी,
कमी महोबत में हो तो माफ़ करना,

भले लोग कहेते फिरे पागल हमें,
इश्क हो जाये तो इज़हार करना,

~ सुलतान सिंह 'जीवन'
(१०:३२, २४ अगस्त २०१६)

# [४०] नाम तुम्हारा हे

भीगी अश्को पर आज,
फिर नाम तुम्हारा हे,

नींद नहीं आती अब,
ये सपना तुम्हारा हे,

संगीत भले हो ये मेरा,
मिलता सुर तुम्हारा हे,

आवाज भले हो मेरी,
ये अहेसास तुम्हारा हे,

भीगी अश्को पर आज,
फिर नाम तुम्हारा हे,

याद भले आये मुझे,
चहेरा बस तुम्हारा हे,

कोशिश भूलने की तुजे,
ये आगाज तुम्हारा हे,

जी रहे तुम ठुकराकर,
शायद अंदाज़ तुम्हारा हे,

भीगी अश्को पर आज,
फिर नाम तुम्हारा हे,

~ सुलतान सिंह 'जीवन'
(८:२३, १२ सितंबर २०१६)

## [४१] देखा हे

कही सूरज को ढलते देखा है,
कही मौसमभी बदलते देखा है,

ना जा ऐ महबूब दिलसे दूर यु,
इश्क को चितापे जलते देखा है,

वो शायद अपना ही था कोई,
आज उसे रूप बदलते देखा है,

कही होगा वो सतरंगी प्रियतम,
हर किसीको रंग बदलते देखा है,

चाहा था जिसे कुछ इस कदर,
अपनी पहचान बदलते देखा है,

रहे गया था कोई मेरी राह में,
उसे अब राह बदलते देखा है,

~ सुलतान सिंह 'जीवन'
( ११:१२, १३ सितंबर २०१६)

# [४२] मृगजल देखा

जब हमें पैरो तले जमीन नही मिली,
तभी हमने ऊपर का आसमान देखा,

इश्क मे जब कभी हमारा दिल टूटा,
तब राहोमे आनेवाला अंजाम देखा,

उनकी आंखोमें जबभी डूबकर ढूंढा,
बस सूखा सीरा और मृगजल देखा,

जब कभी भरी और आँखे रोइ थी,
जेबमें पडा गिला तभी रुमाल देखा,

करते रहे थे सदाये मन्नते इश्क़ में,
उन्होंने खेल ये बड़े शुकुन से देखा,

शायद खुदाभी दिल खोल रोया था,
अंजाम-ए-बारिश पुरे संसारने देखा,

~ सुलतान सिंह 'जीवन'
(५:२३, २२ सितंबर २०१६)

# [४३] ऊंचाई

कबतक अब राहे भी यही खड़ी हे,
अतः मंज़िलकी यहाँ किसे पड़ी हे

ऊंचाईआ ना नाप किसी इंसान की,
जड़े तो अभी भी गहराई में पड़ी हे,

चुनी होंगी सीढिया खुद हाथो से,
तभी तो वो सीना तान के खड़ी हे,

कांटेभी कई लगे होंगे राहमे चलते,
शख्सियत तभी आसमान चढ़ि हे,

कभी ना भूल ऐय इन्सान उसको,
जिसके होने से जीवन हर घड़ी हे,

~सुलतान सिंह 'जीवन'
(११:३२, २७ सितंबर ३०१६)

## [४४] हु अटे, तू कटे हे...

हूं अटे हाजर वुओ हू, थू हाजर कटे हे,
पेला तो बोलायो, हमें थू फरार कटे हे,

बगीचा में फूलों री खुशबु लेता रेता थे,
हूं तो आयो हु अटे, थोरी बहार कटे हे,

करेय करती प्रेमरी वात, कदी फरवा री,
हूं आयो पण थारी आज तियारी कटे हे,

मने कोय ठा हमें थारे मने कोय चाले हे,
हूं तो पुछु आज थारी प्रेम कटार कटे हे,

भूले भले अण प्रेमरी वातोने समय सागे,
याद करजे दिदोड़ा वायदारा बोल कटे हे,

दिल तोड़ चली जाई एक दन केन राखती,
व्यव्हार साचवणी री थारी आदत कटे हे,

~सुलतान सिंह 'जीवन'
(१२:१२, २९ सितंबर २०१६)

[हिंदी कम देशी मारवारी भाषा में...]

## [४५] सदा-ए-इश्क

सुना है आजकल फिर वो आहे भरने लगी है,
शुकर हे खुदा कोई हे जो मुजपे मरने लगी है,

यादोके भी मयखाने नहीं सजाया करते हम,
और वो मयखानोंमे ही सपने सजाने लगी है,

जिंदा लोग अब नहीं समझते सदा-ए-इश्क,
कब्रस्तानमें अब लाशे महोबत करने लगी है,

नफरत जिन्हें थी इश्क सजावट के नाम से,
वोही जाने क्यों अब सजने सवरने लगी हे,

कभी वहा सूखा और भीगासा ही मंजर था,
आज पानीमें भी यहा आग सुलगने लगी हे,

कही सदाए इश्क को भी लोग नफ़रत कहते,
आज उसी इश्क की दुआएं नीकलने लगी हे,

पहले कहती थी बेवजह हे ये इश्क़ महोबत,
इश्क के जाम अब खुद लगा लिया करती हे,

~सुलतान सिंह 'जीवन'
( १२:३९, २ ओक्टूबर २०१६ )

## [४६] नाम चाहिए

**एक जिंदगी अब बस तेरे नाम चाहिए,**
**बस साथ तू, और हसीन शाम चाहिए,**

**कही शबाब कही मयखानों में शराब,**
**इश्कका ये एक जाम तेरे नाम चाहिए,**

**हर रात भले गुजरे अकेले युही तनहा,**
**मिले कशिश तब आग सुलगनी चाहिए,**

**कभी राहो मे फूल कभी हरदम शुकुन,**
**माहोबत की बारिशभी बरसनी चाहिए,**

**अंजाम नहीं पता इश्क, महोब्बत का,**
**पर कही तो तन्हाई भी तरसनी चाहिए,**

**कहते हे इश्क़ में शामें रंगीन लगती हे,**
**कभी सुबह रंगीन होके महेकनी चाहिए,**

**~ सुलतान सिंह 'जीवन'**
**( ११:१२, ७ अक्टूबर २०१६ )**

# [४७] हम न हो.

**कभी तो मान लिया कर ऐ जानेमन,**
**कल तुम रहो और शायद हम न हो,**

**फिर चाहे मिले ये अंजाम महोबतमें,**
**दिल मे दर्द, आँखे शायद नम न हो,**

**गुजरता रहेगा यूं ही ये सिलसिला,**
**महोब्बत का शायद कोई गम न हो,**

**दर्द पिता रहता हु, कभी ख़ुशी मिले,**
**इंसाफ खुदाकाभी शायद कम न हो,**

**कभी तो जान लिया कर ऐ जानेमन,**
**कल तुम रहो और शायद हम न हो,**

**~ सुलतान सिंह 'जीवन'**
**( १२:४९, २५ अक्टूबर २०१६ )**

# [४८] पार न करो.

नजर से नजर को तुम पार न करो,
इस कदर आँखोंसे तुम वार न करो,

देखलो कभी हमे पास आकर तुम,
नजरे दिल के अब आरपार न करो,

कशिश हे तेरी इन सुन्न निगाहों में,
दिन ये तो आजका नाकाम न करो,

महोब्बत तेरी आंखो में जलकती हे,
अंजान होने का तुम ऐलान न करो,

कुछ नहीं है हमारी तुम्हारी महोबत,
बस साथ रहने से इनकार न करो,

नजर से नजर को अब पार न करो,
इस कदर दिलपर तुम वार न करो,

~ सुलतान सिंह 'जीवन'
(११:३२, १० नवम्बर ३०१६)

## [४९] रहने दो तो अच्छा हे

मेरी उन बातों को यादों में ही रहने दो तो अच्छा हे,
कुछ हालातो को हालात में ही रहने दो तो अच्छा है,

भूले हे वो हमें, या शायद हमने ही भुला दिया होगा,
इन राजो को बीते राजो में ही रहने दो तो अच्छा है,

बहोत आती है, अब आज कल यादे उनकी हमें भी,
उन यादोको अपने हाल में ही रहने दो तो अच्छा है,

पूछ लेती थी कभी बिखरे पड़े हाल को सवारु कैसे,
उन हलातको अब बिखरते ही रहने दो तो अच्छा है,

जरुरत नहीं हे अब हमें दुप्पटे की आंसू छुपाने को,
गिरते आंसुओको आँखों में ही रहने दो तो अच्छा है,

क्या कशिश तेरी आंखोंकी, मुस्कान और होठोकी,
उन कशिश को अरमानो में ही रहने दो तो अच्छा है,

बिखर ही जायेंगे अगर फिर हुई कोशिशे जोड़नेकी,
टुटाफूटा सा अब टुकड़ो में ही रहने दो तो अच्छा है,

~ सुलतान सिंह 'जीवन'
( १:१५ दोपहर, १४/११/२०१६ )

## [५०] काले धन पे बदलाव

पुराने नोटको बंध करवा देने का शुक्रिया,
नई करंसी को बाजारमे लाने का शुक्रिया,

जागते रहकर मैंने, सारे हिसाब कर लिए,
ऐ बिजली आज साथ निभाने का शुक्रिया,

पुराने से नॉट थे अब नए को जगह मिली,
स्वागत नई नॉट और बदलाव का शुक्रिया,

न होती गर काली कमाई तो क्यों छुपाता,
तिजोरियों नॉट छुपाए रखने का शुक्रिया,

नॉटबंधी से उदास, बिस्तरमें सिमट गया,
मोदीजी नोटोको बंध करवाने का शुक्रिया

बैंककी कतारे ही लगती है मुझको तो घर,
काली कमाई को आग लगाने का शुक्रिया

नए नॉट देखते ही और निखरती है हँसी,
नोटो से देश मे बदलाव लानेका शुक्रिया

~सुलतान सिंह 'जीवन'
( १:४१ रात्रि, २०/११/२०१६ )

((★ शायद यह वास्तविक कविता ग़ालिब की हे।
जिसके आधार पर मैने ये कविता लिखी है। ★))